देवभूमि-सौरभम्
Devabhūmisaurabham
Vol 1 Issue 1 January 2024 Devabhūmisaurabham International Journal of CSU Shri Raghunath Kirti Campus Devprayag Uttarakhand India

वीर सावरकर का विचार दर्शन-एक अवलोकन

डॉ अरविन्द सिंह गौर
सहायक प्राध्यापक (इतिहास)
केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय
श्री रघुनाथ कीर्ति परिसर, देवप्रयाग (उत्तराखण्ड)

साहस, धैर्य, पराक्रम, और राष्ट्रभक्ति के पर्याय, ओजस्वी वक्ता, क्रांतिकारी साहित्यकार एवं भारतीय स्वतंत्रता के महानायक वीर विनायक सावरकर का जन्म उस समय हुआ जब भारत का प्रथम संगठित स्वतंत्रता प्राप्ति का प्रयास अर्थात् 1857 की क्रांति असफल हो चुकी थी और बौखलाई ब्रिटिश सरकार भारतीयों पर अत्याचार का कहर बरसा रही थी। सावरकर ने जिस चितपावन ब्राह्मण कुल में जन्म लिया। वह कुल चापेकर बंधु, लोकमान्य गंगाधर तिलक जैसे राष्ट्रभक्तों का कुल था। अत: वीर सावरकर को देशभक्ति का गुण विरासत में प्राप्त हुआ था। जब वे अपनी बाल्यावस्था में ही थे तभी 1898 ई. में चापेकर बंधुओं को फाँसी की सजा दी गई। इस घटना ने सावरकर को इतना व्यथित किया कि उस पूरी रात्रि वे सो न सके तथा मध्यरात्रि के समय अपनी कुल देवी दुर्गा के सम्मुख प्रतिज्ञा ली ‘‘मातृभूमि को विदेशियों से मुक्त कराने के लिए आजीवन सशस्त्र क्रांति का ध्वज लेकर जूझता रहूँगा, चाहे इस प्रयास में हम तीनों भाईयों की भी वही नियति क्यों न हो, जो चापेकर बंधुओं की हुई।‘‘[1]

वीर सावरकर परम राष्ट्रभक्त, अखण्ड भारत के उपासक और महान क्रांतिकारी थे। वे विद्यार्थी जीवन से ही पराधीन मातृभूमि को स्वतंत्र कराने में जुट गये थे। ब्रिटिश साम्राज्य से विद्रोह करने के कारण उन्हें ‘काला-पानी’ की सजा हुई, मगर इस काले पानी की कठोर यंत्रणा के सामने भी उन्होंने घुटने न टेके और आजीवन संघर्ष का बिगुल बजाते रहे। सावरकर का विचार दर्शन संकुचित न होकर व्यापक था। उन्होंने प्रारंभ से ही मानव-अधिकारों की बात कही। वे जानते थे कि कोई स्वतंत्रता तब तक पूर्ण प्राप्त नहीं हो सकती जब तक कि मानव को उसके अधिकारों व समानता से दूर रखा जाए। उनके पूरे जीवन काल के अध्ययन से यह बात विशेष रूप से सामने आती है कि वे हिंदू धर्म के उत्थान एवं हिन्दी भाषा के प्रचार व प्रसार को भी महत्वपूर्ण मानते थे। उन्होंने अपनी अण्डमान कारावास के दौरान बंदी कारावास के दौरान बंदी जीवन की अमानवीय कार्यों

एवं असमानता के खिलाफ आवाज बुलंद की और कुछ हद तक सफलता भी प्राप्त की। सावरकर के विचार दर्शन या पूरे जीवन चक्र में अण्डमान कारावास जहाँ उन्होंने अपने जीवन का आधे से भी अधिक समय गुजारा, का महत्वूर्ण स्थान है।

सावरकर के विचार-दर्शन को हम निम्न बिंदुओं के आधार पर समझ सकते हैं -

1- सावरकर का हिंदी प्रेम,

2- हिंदू-शुद्धीकरण,

3- बंदी-सुधार के प्रयास,

4- शिक्षा-प्रसार के कार्य,

5- अछूतोद्धार कार्य,

6- सर्वजाति-सहभोज,

7- सैनिकीकरण का प्रचार,

8- भारत विभाजन का विरोध।

1. सावरकर का हिंदी प्रेम- सावरकर इस बात को अच्छी तरह से जानते थे कि हिंदी भाषा ही अंततः राष्ट्रभाषा का रूप ले सकती है। अतः उन्होंने अपनी संस्था ''अभिनव भारत समाज'' में भी इसे शामिल किया। सावरकर को अपने इस हिन्दी प्रेम के कारण कभी-कभी विरोध का भी सामना करना पड़ा परंतु सावरकर विरोधों ओर परेशानियों से अतिरिक्त ऊर्जा प्राप्त कर दोगुने साहस के साथ कार्य प्रारंभ करते थे। जब सावरकर को दो आजीवन सश्रम कारावास की सजा के लिए ''अण्डमान'' ले जाया गया तो वहाँ भी उन्होंने अपने इस हिंदी-प्रेम को न केवल बनाए रखा वरन् साथी कैदियों को भी हिंदी का महत्व समझाकर हिंदी का प्रचार-प्रसार किया।

वे बंगालियों, मराठियों, गुजरातियों, पंजाबियों को भी हिदीं बोलने व हिंदी में कार्य करने के लिए कहते थे। हिंदी भाषी लोगों से भी उनका आग्रह था कि वे क्षेत्रीय भाषाएँ सीखें। उन्होंने वहाँ के अधिकारियों को भी हिंदी सिखाना प्रारंभ कर दिया। सावरकर के साथ इस कार्य में उन बंदियों ने भी सहयोग प्रदान किया, जो आर्य समाज को मानने वाले थे। सावरकर ने जेल में हिंदी किताबें मँगवाना शुरू किया, इससे पहले कारावास का सभी कार्य उर्दू में होता था। बहुत से सिख, गुजराती, बंगाली, पंजाबियों को हिंदी की पुस्तकें मंगवाना अरूचिकर लगता था वे तो केवल अपनी क्षेत्रीय भाषा की पुस्तकें ही पढ़ना चाहते थे। तब सावरकर ने उन्हें समझाया कि वे स्वयं भी मराठी भाषी हैं, और उन्हें गुरूमुखी भाषा का भी ज्ञान हैं, इसके बावजूद वे हिंदी के महत्व को जानते हैं। उनके मन में किसी भी भाषा के प्रति द्वेष नहीं हैं। परंतु वे राष्ट्रभाषा के रूप में केवल हिंदी को ही प्रतिष्ठित करने योग्य मानते थे।

'अण्डमान' के मुंशी, शिक्षकों को हिंदी का ज्ञान नहीं था उनकी भाषा उर्दू हुआ करती थी परिणामत: संपूर्ण अण्डमान की ही भाषा उर्दू हो गई थी। पहले बंदियों को उर्दू में ही पत्र लिखना होता था परंतु सावरकर के प्रयासों के परिणामस्वरूप अब वे अपनी मातृभाषा या हिंदी में पत्र लिखने के लिए स्वतंत्र थे। कारावास मे हुए हिंदी प्रसार से भयभीत होते हुए जेल प्रशासन को हिंदी के जानकारों को नियुक्त करना पड़ा परिणामत: ''अण्डमान कारावास'' में उर्दू की जगह हिंदी ने ले ली। सावरकर ने हिंदी सीखने के लिए प्रेरित करने के उद्देश्य से कुछ छात्रवृत्तियाँ प्रारम्भ की। हिंदी पढ़ने वालों का उत्साहवर्धन हुआ। सर्वप्रथम वहाँ की कन्या पाठशाला में हिंदी पढ़ाई जाने लगी। सावरकर चाहते थे कि बालकों को भी हिंदी पढ़ाई जाए, परंतु जब तक वे इस हेतु प्रयास करते, उनका बंदी-जीवन समाप्त हो गया और उन्हें मुक्त कर दिया गया।

2. हिंदू शुद्धीकरण- उस समय अंग्रेजों का शासन था और वे ईसाई मत के अनुयायी थे। उन्होंने अपने ईसाई धर्म के प्रचार-प्रसार के लिए भारतीयों को ईसाई बनाने का कार्य प्रारंभ किया। इसके लिये वे लालच, भय, मदद का प्रयोग करते थे। उधर, दूसरी तरफ मुसलमान भी इस्लाम के प्रसारों के लिए और अपनी प्रभुत्ता स्थापित करने के लिए भय और लालच दिखाकर हिंदुओं को मुस्लिम बनाने के प्रयास में लगे हुए थे।

ऐसे वातावरण से भला 'अण्डमान' जैसी जगह जहाँ मुस्लिमों का प्रभुत्व स्थापित था, कैसे अप्रभावित रह सकती थी। सावरकर ने अनुभव किया कि वहाँ वार्डर, पेटी अफसर, जमादार जैसे पदों पर पठान, बलूची, मुस्लिमों को नियुक्त किया जाता था, विशेषत: राजनीतिक बंदियों पर, क्योंकि यदि इन पदों पर हिंदूओं को नियुक्त किया जाता तो उनके हिंदू कैदियों के प्रति नरम व्यवहार की संभावना अधिक होती, जिससे कहीं बहुत बड़ा विद्रोह कारावास में भी होने की संभावना हो सकती थी। ये अधिकारी हिंदुओं पर अत्यधिक बर्बर व अपमानजनक व्यवहार करते थे। इनका प्रयास उत्पीड़न के द्वारा कैदियों को मुस्लिम बनाना होता इसके लिए वे कैदियों को यह विश्वास दिलाते कि मुस्लिम बनने पर उन्हें इन कष्टों से मुक्ति मिल जाएगी।

सावरकर इस कुत्सित वातावरण व मनोवृत्ति से आहत थे और स्थिति को सुधारना चाहते थे। सावरकर के मन में विचार उत्पन्न हुआ कि क्यों न हिंदूओं को शुद्वीकरण द्वारा पुन: हिंदू बनाया जाए। सावरकर ने इस हेतु प्रयास प्रारम्भ किए। प्रारम्भ में तो अधिकारियों का इस बात पर कोई ध्यान ही नहीं गया। 1913 ई. में सावरकर के प्रयास से हिंदू को पठान बनाने का एक मामला अधिकारियों के पास गया।

सावरकर ने हिंदू से मुस्लिम बने लोगों को पुन: अब हिंदुओं के साथ ही बैठाकर भोजन कराना प्रारम्भ किया परंतु हिंदुओं ने पुन: हिंदू बने लोगों साथ भोजन करना स्वीकार नहीं किया। अत: सावरकर ने उनसे पृथक एक पंक्ति बनाकर उसमें पुन: हिंदू बने लोगों के साथ स्वयं भोजन करना प्रारम्भ किया। इस प्रकार कारावास

में कई हिंदू पुन: हिंदू धर्म में वापस आ गए। परिणामत: मुस्लिम सावरकर से नाराज हो गए और उन्होंने सावरकर के खिलाफ षड़यंत्र रचना प्रारंभ कर दिये परंतु उनके प्रयास भी सावरकर को शुद्धीकरण के कार्य से नहीं रोक सके।

“एक अंग्रेज अधिकारी ने जब सावरकर से किसी प्रश्न के उत्तर पर कहा- कि तुम हिंदू लोग मुसलमानों को हिंदू धर्म में क्यों नहीं शामिल कर लेते? इस प्रश्न के जबाब में सावरकर ने कहा कि हमारा धर्म किसी को भी बलपूर्वक अपने धर्म में मिलाने में विश्वास नहीं करता।”[2] जब तक सावरकर अण्डमान कारावास में रहे, तब तक सावरकर ने इस शुद्धीकरण के कार्य को जारी रखा। सावरकर मूलत: एक हिंदूवादी नेता थे उन्होंने कभी भी हिंदू शुद्धीकरण के नाम पर हिंदू से किसी अन्य धर्म में शामिल हुए व्यक्ति को जबरन् हिंदू बनाने का प्रयास कभी नहीं किया। सावरकर ने हिंदुओं की हीनता की भावना को दूर कर उनमें सम्मान का भाव जागृत कर अण्डमान के कुत्सित वातावरण में आशा की एक किरण जलाने का प्रयास किया, जो काफी हद तक सफल भी रहा।

3. बंदी सुधार- बंदीगृह में राजनीतिक बंदियों से भी वो कार्य कराए जाते थे, जो अन्य सामान्य बंदियों से करवाए जाते थे। सावरकर के प्रति बंदीगृह में तथा उसके बाहर भी अगाध प्रेम व निष्ठा का भाव लोगों में था। अत: कोल्हू में लगकर तेल निकालने जैसा असाध्य कार्य, जिसे करने में सावरकर का शरीर साथ नहीं देता था, तो अन्य साथी बंदी समय पाकर उनकी सहायता कर दिया करते थे। पर ऐसा समय बहुत ही कम बार आता था। सावरकर ने इन अमानवीय यातनाओं के खिलाफ विद्रोह का बिगुल बजा दिया। फलत: उन्हें व अन्य राजनीतिक बंदियों को कोल्हू पर काम करने से मुक्ति दे दी गई और उन्हें जूट की रस्सियाँ बनाने का कार्य दिया जाने लगा हालांकि प्रारम्भ में इस कार्य में भी छाले पड़ जाते थे परंतु यह कार्य पूर्व के कार्य की अपेक्षा सरल था।

मुसलमानों द्वारा भी उन पर किए जाने वाले अत्याचारों पर भी कुछ हद तक कमी आने लगी। सावरकर ने कैदियों में स्वतंत्रता प्राप्ति के लिए क्रांति आवश्यक है, की भावना विकसित करने का प्रयास किया और इसमें सफल भी हुए। सावरकर ने राजनीतिक बंदियों को शिक्षित करने का कार्य प्रारम्भ कर दिया। राजबंदियों को प्रतिमाह बदला जाता था इस अदला-बदली में बंदियों को परस्पर एक- दूसरे के दर्शन हो जाते थे। कभी-कभी दो बातें करने का भी अवसर प्राप्त हो जाता था। सावरकर के प्रयासों से अधिकारियों का बंदियों के प्रति व्यवहार में कुछ नमी अवश्य आई थी। बंदी अब एक-दूसरे की परवाह करने लगे थे और सावरकर को समय मिल गया था क्रांति की मशाल कारावास में भी जाग्रत करने के लिए।

4. शिक्षा प्रसार के कार्य -सावरकर जीवन में शिक्षा को बहुत अधिक महत्व देते थे। अत: जब सावरकर को अण्डमान की जेल में समय मिला तो उन्होंने उस समय का भरपूर सदुपयोग किया। उन्होंने बंदियों में शिक्षा का प्रसार करने का बीड़ा उठाया। सबसे पहले उन्होंने उन बंदियों को शिक्षित करने का निश्चय किया जो उनके साथ ही कमरे में बंद थे। सावरकर ने बंदियों को वीर-गाथाएँ, महापुरूषों की कहानियों, ऐतिहासिक कथाएँ सुना-सुना कर उनमें वीर रस का प्रसार किया और देश की स्वतंत्रता के लिए शिक्षा के माध्यम से उनमें क्रांति की ज्योति जाग्रत की।

रविवार को कारावास में कुछ बंदियों को किताबें दी जाती थीं और शाम को ही वो किताबें बॉर्डर वापस ले लेता था इनमें से अधिकांश किताबें विवेकानंद, टॉल्सटाय, थियोसोफिकिल दर्शन व पत्रिकाएँ होती थी। कारावास का एक अधिकारी, जिसे धारी कहा जाता था, स्वयं पुस्तकों का निरीक्षण करने के बाद ही उन्हें बंदियों के पास भेजता था। यदि पुस्तक में कहीं भी स्वतंत्रता शब्द का उल्लेख होता तो वादी या तो उन पेजों को फाड़ देता या फिर काला रंग कर देता। सावरकर के शिक्षण कार्य का बंदियों पर व्यापक प्रभाव पड़ा वे कारावास की यातनाओं का, अन्यायों का विरोध करने के लिये हड़ताल तक करने के लिए तैयार हो गए। सावरकर ने स्वयं भी बंग्ला साहित्य का अध्ययन किया । जघन्य अपराधियों को भी अक्षर ज्ञान करवाया।

स्वास्थ्य खराब होने के कारण जब सावरकर को कारावास से आजाद किया गया तो उस समय कारावास की जेल में दो हजार पुस्तकें एकत्रित की जा चुकी थी। सावरकर के प्रयासों से कारावास के अधिकांश कैदी शिक्षित हो चुके थे।

5. अछूतोद्धार के प्रयास- सावरकर ने इस दिशा में इतना कार्य किया कि आगे चलकर हिंदुओं का समर्थन भी उन्हें प्राप्त होने लगा। परंतु अब भी एक प्रश्न ऐसा था, जिस पर उन्हें विरोधों का सामना करना पड़ा और वो कार्य था शुद्ध किए गए हिंदुओं की पुत्रियों के विवाह का प्रश्न। इसे उन्होंने महाराज मसूरकर, जो कि अछूतों को धर्मांतरित करने में सक्रिय रहे थे, के सहयोग से हल किया। मुस्लिम सावरकर को हिंदू से मुसलमान लोगों को शुद्धीकरण द्वारा पुन: हिंदू बनाने के कारण संदेह की दृष्टि से देखा करते थे।

सावरकर ने डॉ. अंबेडकर के अछूतोद्धार के कार्यों की न केवल प्रशंसा की वरन् उन्हें यथासंभव सहयोग भी प्रदान किया। अछूतों के उपनयन संस्कार, मंदिर में प्रवेश, सहभोज आदि के कार्यों में सावरकर ने सदैव अंबेडकर को पूर्ण सहयोग प्रदान किया। इससे प्रेरित होकर अछूतों ने नेता 'श्री पी.एन. राजाभोज' ने कहा- ''आरम्भ में तो मैं सावरकर के आंदोलन को केवल एक द्रष्टा के रूप में देख रहा था, किंतु जब मैंने उनसे चर्चा की और स्वयं अपनी आँखों से उनके कार्य को देखा तो मैं उससे अभिभूत हो गया। मैं अनुभव करता हूँ

कि वे राजनीति के क्षेत्र में ही नहीं अपितु सामाजिक क्षेत्र में भी उसी प्रकार की क्रांति लाने के लिए कृत संकल्प हैं।''

रत्नागिरी के विठोवा मंदिर में अछूतों के प्रवेश के समय सावरकर ने जो महत्वपूर्ण भूमिका निभाई, उसके लिए उनका नाम इतिहास में स्वर्णाक्षरों में सदा के लिए अंकित हो गया। रत्नागिरी में रहते हुए उन्होंने उनके ग्रंथों की रचना की। अछूत समस्याओं को लेकर उन्होंने एक नाटक ''उःशाप'' की रचना भी की।

6. सर्वजाति सहभोज -रत्नागिरी के मंदिर में सावरकर समय-समय पर सहभोज एवं सम्मिलित पूजन कार्य कराते रहते थे। सवर्णों में अछूतों के साथ भोजन करने में कोई रूचि नहीं थी और अछूत सवर्णों के साथ बैठकर भोजन करने के लिए आतुर थे। अतः ऐसी स्थिति में सावरकर ने ''सर्वजाति विशाल सहभोज का आयोजन किया। यह सहभोज उन दिनों के समाचार-पत्रों में बड़ा ही चर्चित रहा था। उनके इन सराहनीय प्रयासों के लिए उन्हें चेतावनियाँ व जान से मार देने की धमकियाँ दी जाने लगीं किंतु सावरकर विषम परिस्थितियों में भी सक्रिय रहे। उनके दो सर्वजाति सहभोज अत्यधिक प्रसिद्ध रहे, जो निम्न है:-

प्रथम सर्वजाति सहभोज (रत्नागिरी) - 16 नवम्बर 1930 ई.

प्रथम महिलाओं का सहभोज - 17 दिसम्बर 1931 ई. को श्री गणेशोत्सव में कीर्तन, महारों का गीतापाठ का कार्यक्रम आयोजित किया गया। सावरकर ऐसे पहले व्यक्ति थे जिन्होंने इतने बड़े स्तर पर सर्वजाति सहभोज का सफल आयोजन सम्पन्न किया था।[3]

7. सैनिकीकरण का प्रचार- 'भारत में सावरकर समयकालीन नेताओं में ऐसे प्रथम हिंदू नेता थे, जो लोगों के लिए सैनिक शिक्षा आवश्यक मानते थे।'[4] वे जहाँ भी जाकर वक्तव्य देते उनकी ओजस्वी वाणी का युवाओं पर ऐसा प्रभाव पड़ता कि वे सेना में शामिल होकर सैनिक शिक्षा लेने के लिए तत्पर नजर आने लगते थे। उन्होंने लाहौर, अमृतसर, ग्वालियर, नासिक अजमेर आदि शहरों में अपने ओजस्वी भाषण के द्वारा युवकों को सैनिक शिक्षा प्राप्ति के लिए प्रेरित किया।[5]

दिसम्बर 1939 ई. में कलकत्ता में ''हिंदू-महासभा'' का वार्षिक अधिवेशन आयोजित हुआ। इसकी अध्यक्षता सावरकर ने की लोगों ने उनका इतना भव्य स्वागत किया कि उनकी शोभा-यात्रा बंगाल के इतिहास में अभूतपूर्व घटना बन गई । सावरकर ने नारा दिया - ''हिंदुओं का सैनिकीकरण और सेना का हिंदूकरण''।[6]

'सावरकर के प्रयासों से सेना में अधिकाधिक हिंदुओं की भर्ती होने लगी। ''वायसराय लॉर्ड लिनलिथगो'' सावरकर से प्रभावित हुए और उनके सम्मान में एक टी पार्टी का आयोजन किया। इस पार्टी में सावरकर ने वायसराय से हिंदू राजनीति के बारे में विस्तृत रूप से व्याख्या की।[7]

8.भारत विभाजन का विरोध- 15 अगस्त 1947 ई. को भारत गुलामी की लंबी दासता से मुक्त हुआ और भारत में विभाजन की लहर उठी। सावरकर ने सदैव पाकिस्तान विभाजन का विरोध करते हुए कहा कि या तो सारे मुस्लिम पाकिस्तान में चले जाए या फिर विभाजन हो ही नहीं, क्योंकि यदि ऐसा होता है तो भारत में दंगे फैल जाएँगे, जिससे भारत व पाकिस्तान दोनों को ही भारी जन-धन की हानि होगी और उनकी ये भविष्यवाणी आगे चलकर अक्षरशः सत्य साबित हुई।[8]

सावरकर का विचारदर्शन आज भी अनुकरणीय है। कोई भी हिंदी के महत्व से इंकार नहीं कर सकता। सावरकर एक बहुत ही दूरदर्शी एवं अनुभवी व्यक्ति व साहित्यकार थे। उन्होंने भारत को एक दर्शन प्रदान किया। सावरकर का संपूर्ण साहित्य हालांकि अभी सहज सुलभ नहीं हैं क्योंकि उनकी अधिकांश रचनाओं का अभी तक अनुवाद नहीं किया जा सका है। सावरकर जैसे विचारों के इतिहास व्यक्तित्व व सच्चे वीर सपूत यदा-कदा ही धरती पर जन्म लेते हैं हम भारतवासी धन्य हैं कि इस इतिहास पुरूष की जन्म एवं कर्म भूमि भारत रही है।

सन्दर्भ-ग्रंथ सूची-

1- समिति सावरकर, सावरकर समग्र, स्वातंत्र्यवीर विनायक सावरकर, जिल्द-4, 2002, प्रभात प्रकाशन, दिल्ली ।
2- कौशिक अशोक, युग पुरूषवीर सावरकर, सूर्य भारती प्रकाशन, नई दिल्ली- 2005, पृ.165 ।
3- सहस्त्रबुद्धे प्र.ग. , स्वातंत्र्यवीर सावरकर, लोकहित प्रकाशन, लखनऊ, 2003, पृ.5-6 ।
4- गोयल शिवकुमार, सावरकर ने कहा था, प्रतिभा प्रतिष्ठान दिल्ली – 2002 ।
5- सावरकर विनायक, गोमांतक, हिंदी साहित्य सदन, दिल्ली-2006 ।
6- कौशिक अशोक, युग पुरूषवीर सावरकर, सूर्य भारती प्रकाशन, नई दिल्ली- 2005, पृ.246-247 ।
7- कलेकर चि.बा., सावरकर का विचार दर्शन, लोकहित प्रकाशन, लखनऊ- 2003 ।
8- कौशिक अशोक, युग पुरूषवीर सावरकर, सूर्य भारती प्रकाशन, नई दिल्ली- 2005, पृ.275 ।